[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3672

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

रंगों का चित्रकला में महत्वपूर्ण योगदान

अंशुली शुक्ला शोध छात्रा,
चित्रकला विभाग, कला संकाय, डी.ई.आई., आगरा

प्रागैतिहासिक काल से ही चित्रकला में रंगों का मुख्य स्थान रहा है। चित्रकला में रंगों की भूमिका आकर्षण एवं सुन्दरता को प्रकट करती है। सामान्यतः प्रकृति रंगों की खान है। वैज्ञानिकों के अनुसार, रंगों की उत्पत्ति सूर्य के प्रकाश से हुयी है जिसमें रंगों का समावेश मिलता है। रंगों का संयोजन भारतीय कला के अन्तर्गत कई शैलियों जैसे–अजन्ता शैली, पाल शैली, अपभ्रंश शैली, राजस्थानी शैली, मुगल शैली, दक्खन शैली, पहाड़ी शैली आदि में दृष्टव्य है। इसी प्रकार दक्षिण भारतीय राज्यों की चित्रकला रंगों के परिप्रेक्ष्य में केरल की चित्रकला भी विशेष भूमिका रखती है। जिसमें सर्वप्रथम गुहा मन्दिरों में चित्रित भित्ति–चित्र आते हैं।

केरल की चित्रकला में पारम्परिक तौर पर रंगों में पंचवर्णों का प्रयोग होता आया है जिसका सबसे प्राचीन उदाहरण हमें तिरूनंदिक्कारा गुहा मन्दिर से प्राप्त होता है जो वर्तमान समय में तमिलनाडु के कन्याकुमारी जिले में स्थित है। केरल की चित्रण शैली के अन्तर्गत यहाँ पंचवर्णों–लाल, पीला, हरा, सफेद व काले रंग का प्रयोग किया गया है। जहाँ लाल व पीला रंग खनिजों से, हरा रंग वनस्पति से व काला रंग तेल के दीपक की लौ के धुंए से तथा सफेद रंग के लिए चूने का प्रयोग किया जाता था।

केरल की चित्रकला के परिप्रेक्ष्य में रंग प्रतीकात्मक रूप में प्रयोग किये जाते हैं। दैवीय एवं आदर्श रूप दर्शाने के लिये हरा रंग, शक्ति एवं समृद्धि हेतु लाल व पीले रंग की तानों का प्रयोग किया जाता है निम्न वर्गीय चरित्रों को सफेद तथा दैत्य एवं क्रोधित स्वरूप काले रंग में चित्रित किया गया है।

केरल के मन्दिरों में चित्रित भित्ति–चित्रों में चटक, गहरे, सपाट व सुन्दर छाया प्रकाशयुक्त रंगों का प्रयोग हुआ है। जिससे चित्रों में रंगों का संयोजन सुन्दर त्रि–आयामी प्रभाव देता है। केरल की चित्रकला के अन्तर्गत पारम्परिक रू‍प में वनस्पतिक तथा खनिज रंगों का ही प्रयोग किया जाता था जिसका वर्तमान समय में भी केरल में कई स्थानों पर किया जा रहा है तथा कहीं कृत्रिम रंगों का प्रयाग भी किया जा रहा है। रंग चित्र का सार है। जिस प्रकार कविता के लिए शब्द, संगीत के लिए लय तथा काव्य के लिए रस की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार चित्र में रंग का होना अनिवार्य है। रंग के बिना चित्र नीरस है। इसी कारणवश प्रागैतिहासिक काल से लेकर वर्तमान समय तक का कलाकार रंगों का आश्रय लेकर आत्माभिव्यक्ति करता आया है। रंग, चित्रकला का सबसे अधिक सार्थक वर्णनात्मक तत्व है। इसकी सहायता से विस्तार, विचार, भाव आदि का संकेत देने एवं मनः स्थिति को चित्रित किया जा सकता है। जिसके उत्तम उदाहरण हमें यूरोपीय चित्रकला के साथ–साथ भारतीय चित्रकला में भी देखने को मिलते हैं।

सन्दर्भ :–

1.Cultural Heritage of Kerala, A.Sreedhara.Menon, published in Kottayam, Kerala State, 1978.
2.Painted Aboud of Gods Traditions 0f Kerala, A. Ramchandran, Published in New Delhi, 2005.
3.Murals of Kerala , M.G. Sasi bhooshan ,(Department of public Relations,Thiruvananthapuram) 1987.

4.http://en.wikipedia.org/wiki/list of hindu temple in kerala